Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Aaj Samaj **Date: 24-07-2024**

सप्तसिंधु के अध्ययन में हिंदी भाषा का अहम योगदान : प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री

■ हकेवि में विशिष्ट व्याख्यान का हुआ आयोजन

नीरज कौशिक

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यानमाला की शृंखला में सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं उपाध्यक्ष हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी, पंचकुला मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं संरक्षक प्रो. सुषमा यादव, समकुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीर पाल सिंह यादव ने मुख्य वक्ता के स्वागत भाषण से किया। विभाग के सह आचार्य डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय ने मुख्य वक्ता का परिचय श्रोताओं से सांझा किया। मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने सप्तसिंधु शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति

प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री को स्मृति चिह्न भेंट करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार।

पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ऋग्वेद में प्रथमतः सप्तसिंधु शब्द का प्रयोग हमें देखने को मिलता है, जिसका सबंध सात नदियों के योग से है जो सिंधु क्षेत्र में जाकर मिलती हैं। सप्तसिंधु क्षेत्र भारत की आत्मा है। यह एक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, जो संस्कृति, सभ्यता और भाषा के विकास का मुख्य केंद्र है। हिंदी के प्रचार और प्रसार में आम जन के साथ-साथ यहां के विभिन्न सम्राटों, शासकों एवं संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मुख्य वक्ता ने हिंदी के साथ-साथ भूगोल, इतिहास एवं लिपि आदि विषयों पर भी विस्तृत चर्चा की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. अग्निहोत्री के व्याख्यान की प्रासंगिकता पर टिप्पणी करते हुए कहा कि सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा के उद्गम और विस्तार पर आज का व्याख्यान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अत्यंत ज्ञानप्रद है। उन्होंने विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित करने के लिए विभाग को बधाई दी एवं मुख्य वक्ता को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में समकुलपति प्रो. सुषमा यादव ने भी आज के वक्तव्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रो. बीर पाल सिंह यादव ने कार्यक्रम के संयोजक के दायित्व का निर्वहन करते हुए मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रो. पवन शर्मा, कुलानुशासक प्रो. नंद किशोर, प्रो. नीलम सांगवान, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. आनंद शर्मा, डॉ. दिनेश, डॉ. नरेंद्र परमार, डॉ. अंकुश विज, डॉ. कमलेश कुमारी, डॉ. कामराज सिंधु, डॉ. अरविंद सिंह तेजावत, जनसम्पर्क अधिकारी शैलेंद्र सिंह, डॉ. अमित कुमार, डॉ. रीना स्वामी एवं अनेक विभागों के विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Amar Ujala **Date: 24-07-2024**

भारतीय परंपरा और संस्कृति पर प्रकाश डाला

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) महेंद्रगढ़ के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यानमाला की शृंखला में सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने सप्तसिंधु शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए भारतीय परंपरा व संस्कृति पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार, प्रो. सुषमा यादव सम कुलपति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का हिंदी विभाग अध्यक्ष प्रो. बीरपाल सिंह यादव ने मुख्य वक्ता के स्वागत भाषण से किया।

प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने सप्तसिंधु शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए बताया कि ऋग्वेद में सप्तसिंधु शब्द का प्रयोग हमें देखने को मिलता है, जिसका संबंध सात नदियों के योग से है जो सिंधु क्षेत्र में जाकर मिलती हैं। सप्त सिंधु क्षेत्र भारत की आत्मा है। यह एक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, जो संस्कृति, सभ्यता और भाषा के विकास का मुख्य केंद्र है। हिंदी के प्रचार और प्रसार में आमजन के साथ-साथ यहां के विभिन्न सम्राटों, शासकों एवं संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस अवसर पर प्रो. पवन शर्मा, कुलानुशासक प्रो. नंद किशोर, प्रो. नीलम सांगवान, प्रो. आनंद शर्मा, डॉ. दिनेश मौजूद रहे। संवाद

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Bhaskar **Date: 24-07-2024**

सप्त सिंधु के अध्ययन में हिंदी भाषा का अहम योगदान : प्रो. कुलदीप

हकेंवि में विशिष्ट व्याख्यान

महेंद्रगढ़ | हकेंवि के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यानमाला की शृंखला में 'सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व' विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं उपाध्यक्ष हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी, पंचकुला मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक प्रो. टंकेश्वर कुमार कुलपति, हकेंवि एवं संरक्षक प्रो. सुषमा यादव, समकुलपति, हकेंवि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीर पाल सिंह यादव ने मुख्य वक्ता के स्वागत भाषण से किया। विभाग के सह आचार्य डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय ने मुख्य वक्ता का परिचय श्रोताओं से सांझा किया। मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने 'सप्तसिंधु' शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला। 'सप्त सिंधु' क्षेत्र भारत की आत्मा है। यह एक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, जो संस्कृति, सभ्यता और भाषा के विकास का मुख्य केंद्र है। हिंदी के प्रचार और प्रसार में आम जन के साथ-साथ यहां के विभिन्न सम्राटों, शासकों एवं संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मुख्य वक्ता ने हिंदी के साथ-साथ भूगोल, इतिहास एवं लिपि आदि विषयों पर भी विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रो. पवन शर्मा, कुलानुशासक प्रो. नंद किशोर, प्रो. नीलम सांगवान, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. आनंद शर्मा, डॉ. दिनेश, डॉ. नरेंद्र परमार, डॉ. अंकुश विज एवं अनेक विभागों के विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Jagran **Date: 24-07-2024**

सप्तसिंधु के अध्ययन में हिंदी भाषा का अहम योगदान : टंकेश्वर कुमार

प्रो . कुलदीप अग्निहोत्री को स्मृति चिन्ह भेंट करते कुलपति ●सौ. प्रवक्ता

संवाद सहयोगी, जागरण ●महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यान माला की श्रृंखला में 'सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं उपाध्यक्ष हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी, पंचकुला मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीरपाल सिंह यादव ने मुख्य वक्ता के स्वागत भाषण से किया। विभाग के सह आचार्य डा. सिद्धार्थ शंकर राय ने मुख्य वक्ता का परिचय श्रोताओं से सांझा किया। मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने 'सप्तसिंधु' शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला। हिंदी के प्रचार-प्रसार में आमजन के साथ यहां के विभिन्न सम्राटों, शासकों एवं संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि सप्तसिंधु के अध्ययन में हिंदी भाषा का अहम योगदान है। उन्होंने बताया कि सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा के उद्गम और विस्तार पर आज का व्याख्यान विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ज्ञानप्रद है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रो. पवन शर्मा, कुलानुशासक प्रो. नंद किशोर व अन्य उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Ranghosh **Date: 24-07-2024**

सप्तसिंधु के अध्ययन में हिंदी भाषा का अहम योगदान- प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री

रणघोष अपडेट. महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यानमाला की शृंखला में 'सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व' विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं उपाध्यक्ष हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी, पंचकुला मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं संरक्षक प्रो. सुषमा यादव, समकुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीर पाल सिंह यादव ने मुख्य वक्ता के स्वागत भाषण से किया। विभाग के सह आचार्य डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय ने मुख्य वक्ता का परिचय श्रोताओं से सांझा किया। मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने 'सप्तसिंधु' शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ऋग्वेद में प्रथमतः 'सप्तसिंधु' शब्द का प्रयोग हमें

देखने को मिलता है, जिसका सबंध सात नदियों के योग से है जो सिंधु क्षेत्र में जाकर मिलती हैं। 'सप्त सिंधु' क्षेत्र भारत की आत्मा है। यह एक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, जो संस्कृति, सभ्यता और भाषा के विकास का मुख्य केंद्र है। हिंदी के प्रचार और प्रसार में आम जन के साथ-साथ यहाँ के विभिन्न सम्राटों, शासकों एवं संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मुख्य वक्ता ने हिंदी के साथ-साथ भूगोल, इतिहास एवं लिपि आदि विषयों पर भी विस्तृत चर्चा की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. अग्निहोत्री के व्याख्यान की प्रासंगिकता पर टिप्पणी करते हुए कहा कि सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा के उद्गम और विस्तार पर आज का व्याख्यान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अत्यंत ज्ञानप्रद है। उन्होंने विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित करने के लिए विभाग को बधाई दी एवं मुख्य वक्ता को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में समकुलपति प्रो. सुषमा यादव ने भी आज के वक्तव्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रो. बीर पाल सिंह यादव ने कार्यक्रम के संयोजक के दायित्व का निर्वहन करते हुए मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रो. पवन शर्मा, कुलानुशासक प्रो. नंद किशोर, प्रो. नीलम सांगवान, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. आनंद शर्मा, डॉ. दिनेश, डॉ. नरेंद्र परमार, डॉ. अंकुश विज, डॉ. कमलेश कुमारी, डॉ. कामराज सिंधु, डॉ. अरविंद सिंह तेजावत, जनसम्पर्क अधिकारी शैलेंद्र सिंह, डॉ. अमित कुमार, डॉ. रीना स्वामी एवं अनेक लोग मौजूद थे

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Navoday Times **Date: 24-07-2024**

सप्तसिंधु के अध्ययन में हिंदी भाषा का अहम योगदान: प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री

महेंद्रगढ़, 23 जुलाई (परमजीत, मोहन): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यानमाला की श्रृंखला में 'सप्तसिंधु क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व' विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं उपाध्यक्ष हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी, पंचकुला मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं संरक्षक प्रो. सुषमा यादव, समकुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीर पाल सिंह यादव ने मुख्य वक्ता के स्वागत भाषण से किया। विभाग के सह आचार्य डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय ने मुख्य वक्ता का परिचय श्रोताओं से सांझा किया।

मुख्य वक्ता प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने 'सप्तसिंधु' शब्द के महत्व को व्याख्यायित करते हुए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ऋग्वेद में प्रथमत: 'सप्तसिंधु' शब्द का प्रयोग हमें देखने को मिलता है, जिसका सबंध सात नदियों के योग से है जो सिंधु क्षेत्र में जाकर मिलती हैं। 'सप्त सिंधु' क्षेत्र भारत की आत्मा है। यह एक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, जो संस्कृति, सभ्यता और भाषा के विकास का मुख्य केंद्र है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रो. पवन शर्मा, कुलानुशासक प्रो. नंद किशोर, प्रो. नीलम सांगवान, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. आनंद शर्मा, डॉ. दिनेश, डॉ. नरेंद्र परमार, डॉ. अंकुश विज, डॉ. कमलेश कुमारी, डॉ. कामराज सिंधु, डॉ. अरविंद सिंह तेजावत, जनसम्पर्क अधिकारी शैलेंद्र सिंह, डॉ. अमित कुमार, डॉ. रीना स्वामी एवं अनेक विभागों के विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे।

नवोदय टाइम्स
Wed, 24 July 2024
https://epaper.navodayatimes.in/c/75503760

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: The Tribune **Date: 24-07-2024**

CAPACITY BUILDING FOR FACULTY

Mahendragarh: Central University of Haryana (CUH), Mahendragarh, is organising a capacity building programme for it's social science faculty from July 22 to August 3. The programme is being organised by the commerce department in collaboration with Indian Council of Social Science Research (ICSSR). Vice-Chancellor Professor Tankeshwar Kumar was the chief guest at the inaugural programme.